पाठ-3

परमेश्वर ने आपको बनाया

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

परमेश्वर ने प्रथम पुरुष और स्त्री को अपने स्वरूप में बनाया
परमेश्वर चाहता था कि वे उनकी सन्तान बने रहें।
परमेश्वर अपनी सन्तान से प्रेम करता है और उनकी चिन्ता करता है।
परमेश्वर ने आपको भी बनाया और चाहता है कि आप उसकी सन्तान (पुत्र/पुत्री) बनें। परमेश्वर जो आपसे चाहता है उसको करने में आप प्रसन्न होंगे।

नीचे लिखे पद को बाइबल से पढ़ें। इसे पाँच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :

"यहोवा परमेश्वर ने आदम को (मनुष्य के शरीर को) भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूक दिया, और आदम (मनुष्य) जीवता प्राणी बन गया।" उत्पत्ति 2:7.

क्या आप यह कर सकते हैं ?

नीचे दिए गए उत्तर में जो अक्षर नहीं हैं उन्हें लिखें।

1. प्रथम पुरुष (आदम) को बनाने में परमेश्वर किस वस्तु को प्रयोग में लाया ?
   भू.....की मि.....

2. परमेश्वर आपसे क्या बनने की अपेक्षा करता है ?
   उसकी स.....

उत्तर

1. भूमि मिट्टी 2. सन्तान

परमेश्वर ने प्रथम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया
*चिन्ह से आरम्भ होने व इसी चिन्ह से अन्त होने वाले शब्दों के नीचे रेखा खींच दें। * परमेश्वर ने प्रथम मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा।
परमेश्वर ने अपने जीवन का श्वास उसके नथनों में फूंक दिया।
परमेश्वर ने प्रथम मनुष्य का नाम आदम रखा।
आदम बहुत सी बातों में परमेश्वर की समानता में था।

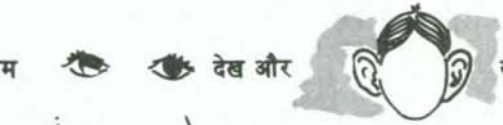

आदम सोच और महसूस कर सकता था।
जैसा परमेश्वर ने आदम से प्रेम किया, वैसे ही वह भी परमेश्वर से प्रेम कर सकता था। *आदम परमेश्वर की सन्तान था।*

परमेश्वर ने आदम से प्रेम किया और उसकी सुधि ली।

परमेश्वर ने आदम के रहने के लिए एक अतिसुन्दर बाग बनाया।
उसने उस बाग को अदन की वाटिका कहा।
उस वाटिका में छायादार वृक्ष और चमकीले सुन्दर फूल थे। हरे घास के मैदान, कलकल करती नदियाँ थीं।
सुन्दर पक्षी और मित्र जानवर थे।
वहाँ खाने के लिए स्वादिष्ट फल थे।
जो कुछ परमेश्वर ने बनाया था वह सब बहुत अच्छा था।

आदम एक सुन्दर और सब सुविधाओं से पूर्ण संसार में रहता था।

परमेश्वर ने करने के लिए काम दिया था।
परमेश्वर ने उसे उसके हाथों से करने के
लिए काम दिया था।
आदम सुन्दर वाटिका की देख-भाल करता था।
परमेश्वर ने आदम को दिमाग से करने के लिए काम दिया था।
आदम ने सभी जानवरों और पक्षियों का नाम रखा।
परमेश्वर ने आदम को ठीक से काम करने में उसकी सहायता की।
*परमेश्वर ने जो कुछ आदम से करने के लिए कहा था वह उन
सब कामों को करने में प्रसन्न था।* आदम परमेश्वर को
प्रसन्न करना चाहता था और उसने किया भी।

प्रतिदिन परमेश्वर वाटिका में आया।
परमेश्वर और आदम ने
एक दूसरे से बातचीत की।
परमेश्वर और आदम आपस में
प्रेम करते थे। आदम ने
मित्रता प्रेमी जानवरों को पसन्द किया।
आदम ने सुन्दर पक्षियों को पसन्द किया।
आदम ने परमेश्वर से बातचीत करना
पसन्द किया। परन्तु आदम को
किसी चीज़ की आवश्यकता थी।
परमेश्वर जानता था कि आदम को क्या चाहिए।
*परमेश्वर अपने बच्चों (सन्तान) की प्रत्येक आवश्यकताओं
को हर समय जानता है।*

परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में सुला दिया।
परमेश्वर ने आदम की पसलियों में से एक
पसली निकाली। उस पसली से
परमेश्वर ने स्त्री को बनाया। कि वह
आदम की सहायता करे और उसे प्रसन्न रखे।
परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद से जगाया।
और उस स्त्री को उसे दिखाया।
परमेश्वर ने जो स्त्री उसे दी थी
आदम ने उससे प्रेम किया।

आदम ने उसका नाम हव्वा रखा। हव्वा आदम की पत्नी बन गई।
आदम और हव्वा इस संसार में प्रथम मनुष्य प्राणी थे।
अदन की वाटिका मे आदम और हव्वा एक साथ प्रसन्न थे।
उन्हें अपने सुन्दर घर से प्यार था। उन्होंने एक दूसरे को प्यार किया।
उन्होंने परमेश्वर से प्रेम किया।
आदम और हव्वा एक साथ परमेश्वर की संगति में चलने और परमेश्वर से बातचीत करने लगे।

परमेश्वर ने आपको बनाया है और यह चाहता है कि आप उसके बच्चे बनें।

परमेश्वर ने आपको पूरा मनुष्य नहीं बनाया जैसा कि उसने आदम को बनाया था। परमेश्वर ने पहिले आपको एक छोटा बच्चा बनाया।
उसने आपको पिता और माँ दिए कि वे आपका पालन-पोषण करें।
परमेश्वर ने जितना अधिक प्रेम आदम से किया, उतना ही अधिक आपसे भी किया। परमेश्वर आपका भी पिता बनना चाहता है।

परमेश्वर चाहता है कि आप प्रसन्न रहें।

आपके पास भी हाथ और दिमाग काम करने के लिए हैं।
अपना कार्य अच्छी तरह से करने का प्रयत्न करें।
आदम के समान आप भी परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयत्न करें।
जो कुछ परमेश्वर आपसे चाहता है उसको करने में आप प्रसन्न होंगे।
क्या आप चाहते हैं कि आपके कार्य में परमेश्वर आपकी सहायता करे।
नीचे लिखी प्रार्थना को याद कर लें और प्रतिदिन प्रातः परमेश्वर से कहें (करें):

प्रार्थना

हे परमेश्वर, कार्य और खेलने के लिए तेरा धन्यवाद हो।
मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे कार्य में सहातया करें।
मेरी सहायता करें कि मैं आज जो कुछ भी करता और जो कुछ भी कहता हूँ उन सब में आपको प्रसन्न करूँ।